Vol 2 Issue 11 May 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 11, May. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी की समीक्षा–दृष्टी

उर्मिला देशमुख

हिन्दी विभागाध्यक्ष, आ.पा.म. यवतमाल (महाराष्ट्र)

सारांशः

हिन्दी साहित्य जगत मके प्रगतिवादी चेतना का उन्मेश कुछ इस प्रकार हुआ कि अन्य समीक्षा–दृष्टीयों की या तो जानबूझकर उपेक्षा की गई या उन्हें एक या दुसरे खाते में डाल दिया गया। इस कारण हिन्दी समीक्षा मे रसवादी चिन्तन के समानान्तर मार्क्सवादी चिन्तन की जो धूम मची, तो साहित्य के वस्तुगत मूल्यांकन पर जोर देनेवाले समीक्षकों की वाणी क्षीण होती हुई दिखाई दी ।

प्रस्तावना :–

बाजपेयी की समीक्षा–दृष्टी कृति–विशेष को आधार बनाकर कृतिकार अथवा युगीन संदर्भों की छानबीन करती हुई उसका देश–काल–सापेक्ष मूल्य निर्धारित करना चाहती है, जिसमे पूर्व निर्धारित अथवा बाहरी सिध्दांतो का कोई महत्व नही होता, उनकी दृष्टी रचनाओं के उदभव और विकास का क्रम निर्धारित करने के लिए सामजिक, सांस्कृतिक कारणो की इस प्रकार व्याख्या करना चाहती है कि वह पाठकों को तर्क सम्मत प्रतीत हो और यदि वे, चाहे तो स्वयं उस प्रकार के निष्कर्षो तक पहुंचने को प्रयत्न करे । उन्होंने सिध्दांत की अपेक्षा व्यवहार पर अधिक ध्यान दिया । उनके इन समीक्षा सूत्रों का विश्लेषण करने के लिए उनकी विचार सरणी निम्न रुप से बनायी जा सकती है ।

1)समीक्षकों की समीक्षा
2)समकालीन लेखकों की समीक्षा
3)तुलनात्मक समीक्षा
4)साहित्यिक सिध्दांतो की समीक्षा ।

1)समीक्षकों की समीक्षा करते समय बाजपेयीजी ने मुख्यतः पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचंद्र शुक्ल के प्रति अपने विचार प्रकट किये । उन्होंने द्विवेदी की कविताओं, सम्पादकीय लेखों, अनुवादों आदि के रुप मे जो तथ्य उल्लेखनिय है, उसीको ग्रहण किया । बाजपेयी जी ने उनके विशय में यह टिप्पणी की :–

"इनकी कविताएँ इसीलिए उपदेश प्रधान है, वस्तु की व्यंजना करती है, अन्तर के तारो को फनफनाती नही, बाहर की ठकठक कुर चुप हो रहती है ।"

आचार्य शुक्लजी की काव्य–रसज्ञता को स्वीकार करते हुए उन्होंने लक्षित किया कि रचनाकार और समीक्षक के मार्ग अलग–अलग है । रचनाकार के लिए व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के मार्ग खुले होते है किन्तु समीक्षक को पूरी तटस्थता से काम करना पडता है । वे शुक्लजी के प्रतिमानों की देशकाल के अनुरुप व्याख्या करते थे, जो समीक्षा की युक्तीयुक्त पध्दती है ।

युग–विशेष की संवेदनाओं को प्राथमिकता देकर दूसरे समीक्षकों की आलोचना करना, उनके सबल और निर्बल पक्षो पर संतुलित ध्यान रखना, सूक्तिमय शब्दावली में अपनी बात कहना, यह सब विशेषताएं समकालीन कवियों, उपन्यासकारों, नाटककारों और कहानी, लेखकों की समीक्षा करते समय परिलक्षित होती है, बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, प्रेमचंद, जैनेंद्र, इलाचन्द जोशी आदि के विषय मे यही तत्व महत्वपूर्ण थे, जिसके कारण उनका व्यक्तिमत्व उभरकर सामने आया ।

2)समकालीन लेखकों की समीक्षा :

बजपेयीजी प्रेमचंद के साहित्य–सर्जना के बडे प्रशंसक नही थे, उनका मानना था की, प्रेमचंद के उपन्यास या कहानी मे विस्तार और बहुरुपता नही पाई जाती, उनमे वर्गगत या जातीय चित्रण की प्रधानता अधिक रही, वैयक्तिक चित्रण की नही । उस साहित्य में उनका कोई स्वतत्र स्वानुभूत दर्शन नही दिखाई देता ।

जैनेंद्र के प्रति उनका मानना है कि विवेचन की दृष्टी से इसे आदर्शहीन आदर्शवाद कहा जा सकता है, जो अतिवादी, मानसिक स्थिती का लक्षण है उनपर जैन–तर्क प्रणाली का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है ।

इलाचन्द जोशी के विषय मे उनकी धारणा दूसरो की अपेक्षा भिन्न थी । उनका कहना था कि अध्ययन और अनुभव की दोहरी ज्योती से उनकी रचनाएं दिपित है ।

बच्चन की काव्य–रचनाओं के विषय मे उनका मत था कि उनकी ख्याति और अनास्थामयी काव्य रागीनी के बीच इतनी गहरी खाई है कि कोई सम्मति देने का साहस नही होता ।

Title : *'आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी की समीक्षा–दृष्टी*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *उर्मिला देशमुख* **yr:2013 vol:2 iss:11**

माखनलाल चर्तुवेदी को बाजपेयीजी ने सूक्तिप्रधान कवि माना, जिसका कारण यह नही कि उनकी उक्तियों में उपदेशात्मकता है बल्कि उनमें भावना का अतिरेक था ।

बाजपेयी जी की समीक्षा दृष्टी का विकास प्रसाद, निराला, पंत की रचनाओं का अनुशीलन करने के पश्चात हुआ । वहॉ उस संवेदना का तारतम्य दर्शनीय है, जिसका न्युनधिक देखते हुए वे प्रसाद को सर्वोपरि स्थान देते है । उनकी मान्यता थी की प्रसाद का साहित्य विशेषकर उनका काव्य किसी नीतिवादी अथवा प्रयोगवादी तुला पर नही तौला जा रकता ।

3)तुलनात्मक समीक्षा : बाजपेयीजी ने एक ओर हिन्दी लेखको के तारतमिक महत्वा का निरुपण किया, जैसा कि, उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है, दूसरी ओर उन्होंने पाश्चात्य लेखकों का उल्लेख करते हुए समीक्षा की व्यापक आधार भूमि का संकेत दिया है । जिसका विकास हिन्दी की परवर्ती समीक्षा में दिखाई देता है ।

तुलनात्मक समीक्षा का एक अच्छा उदाहरण बाजपेयीजी ने दिया है, यूरोप के मध्यकालीन मंडल समाज से प्रेरणा लेनेवाले कवियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने जगन्नाथदास रत्नाकर के विषय में बतलाया कि रत्नाकर जी को भी उसी तरह भारत के मध्ययुग का साहित्य और समाज प्रियकर लगा और उन्होने उसे अपना लिया । वे आगे कहते है कि, "भाषा सौंदर्य, संगीत और छनद–संघटन में कविता के कलापक्ष की मुखरता में यदि रत्नाकर की तुलना अंग्रेज कवि टेनिसन से की जाये तो बहुत अंशो में उपयुक्त होगी ।"

भगवती प्रसाद बाजपेयी की रचनाओं मे परिव्याप्त सेक्स संबंधी अतृप्ती की तुलना डॉ. डी. एच. लारेंस की रचनाओं से करते हुए उन्होने फ्रांसीसी यथार्थवाद की जिस प्रकार समीक्षा की, उससे यह सिध्द होता है किवे रचनाओं के उत्कर्श अवकर्श का संबंध रचचिताओ के व्यक्तित्व के साथ स्थापित करते थे । उनका मानना था कि –हासोन्मुखी व्यक्तित्व का लेखक चाहे जितनी मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता प्रदर्षित करे, चाहे जितनी वैज्ञानिक यथार्थता का दावा करे, वह साहित्य को निचे गिरने से नही रोक सकता । उनकी यह विचार धारा भारतीय और पश्चात्य साहित्य की श्रेष्ठ रचनाओं की तुलना के फेरस्वरुप अधिक समृध्द और दृढ हुई ।

4)साहित्यिक सिध्दांतो की समीक्षा :

बाजपेयीजी ने प्रसंगतः अथवा सुविचारित रुप से जिस प्रकार पारस्परिक अथवा समसामयिक काव्य–सिध्दांतो की परीक्षा की है, उससे भी उनकी समीक्षा–दृष्टी को समझने में सहायता मिलती है । इसमे एक तो उन्होने विभिन्न साहित्यिक वाद–विवादों की चर्चा करते हुए अपना मन्तव्य प्रकट किया, दूसरे अन्यान्य विशयों एवं कलाओं के भीतर साहित्य की वास्तविक भावभूमी को रेखांकित किया । और तीसरे उन्होने एक समीक्षक को उसके कर्तव्य के प्रति जागरुक बनाया । व्यावहारिक समीक्षा का आदर्श प्रस्तुत करने के कारण वे किसी साम्प्रदायिक विवेचन की ओर उन्मुख नही हुए । उन्होंने अपने निबंधो के भीतर सिध्दांतो का चिंतन और विवेचन किया । इस दृष्टी से उनके कुछ निबंध जैसे : "साहित्य का प्रयोजन – आत्मनुभूति ,"

" ध्वनि और रसए " "छायावाद, प्रसाद ओर निराला " आदि महत्वपुर्ण है ।

बाजपेयीजी ने सर्वप्रथम प्रगतिवाद की आलोचना करते हुए कहा कि कोरी बौध्दिक और कला–सृष्टी का भेद समझना चाहिए । किसी रचना के स्वरुप और उसके प्रभावो की पूरी परीक्षा हो जाने पर ही उसकी प्रगतिशीलता या अप्रगतीशीलता का निर्णय किया जा सकता है और तभी भौतिक विज्ञानवाद, अध्यात्मवाद, वर्ग–संघर्श आदि के फिरकों से भी हमारे साहित्य की रक्षा हो सकेगी ।

क्रोंचे के अभिव्यंजनावाद की काव्य के संदर्भ में बडी चर्चा हुई, इसकी सीमा के भीतर संपूर्ण साहित्य को, सभी कलाओ को समेटने का प्रयास हुआ । बाजपयेजी ने काव्य को अभिव्यंजना से भी उंचा ठहराते हुए यह बतलाया कि काव्य का सम्बंन्ध मानव जगत और मानस–वृत्तियों के साथ है, जबकी अभिव्यंजना का सम्बन्ध केवल सौंदर्यपूर्ण प्रकाशन के साथ है। साहित्य की वास्तविक भूमि यह है कि, वह बुध्दी, दर्शन, विज्ञान, नीति आदि सभी को समय बनाकर उपस्थित करता है, उसकी यही प्रणाली सही है । जो समीक्षक युग–विशेष के संदर्भों की प्रमुख धाराओं का विवरण देते हुए तत्कालीन सृजन कार्यों का परिचय कराये, वही उनके मतानुसार श्रेष्ठ है । इसके लिए वे युग संवेदना के साथ समीक्षक के घनिश्ठ परिचय पर बार–बार जोर देते थे, क्यों की तभी वह युगीन साहित्य का सम्यक रुप से आकलन कर सकता है ।

आचार्य बाजपेयी ने भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य–शास्त्र का मन्थन करते हुए एक ऐसे समीक्षा–सूत्र का निर्देश किया, जो न केवल संतुलित और समन्वित है, अपितु, आधुनिक संदर्भो मे पूर्णतः वस्तुगण एवं व्यावहारिक भी है । इसकी विशेषता यह है कि सभी प्रकार के अतिवादी से बचते हुए भारतीय मनोभूमि पर स्थिर रहकर ही इसके द्वारा किसी रचनाकार की अन्तर्वृतियों का विश्लेशण कर देना संभव है । साहित्य का गुण उसमें व्यक्त अनुभूतियों की सच्चाई, मर्मस्पर्शिता और सौंदर्य है, इसीका सम्यक उद्घाटन करना समीक्षक का कर्तव्य है ।
बाजपेयीजी की समीक्षा–दृष्टी नैतिकता अथवा स्थूल उपयोगिता जैसे मानकों को विशेष महत्व नही देता ।

एक समिक्षक के रुप में बाजपेयीजी को सौष्ठववादी, स्वच्छन्दतावादी, समन्वयवादी, प्रतिक्रियावादी शुक्ल परंपरा का विरोधी, उसका सशक्त उत्तराधिकारी माना गया । आचार्य जी का समूचा समीक्षा कर्म एक जागरुक चिन्तक की मेधावी प्रतिभा तथा प्रगतिशील चिन्ता का

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net